उम्मते मुहम्मदीया

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नबी करीम صلى الله عليه وسلم की मुहब्बत

मौलाना मुझफ्फर हुसेन कान्धलवी(रह) से कुछ लोगो ने कहा कि हदीस मे आया हे की उस वकत तक ईमान कामिल नहीं होता जब तक नबी करीम صلى الله عليه وسلم के साथ अपनी औलाद और मां बाप से जियादा मुहब्बत ना हो, और हो तो बजाहिर इस दर्जे की मुहब्बत नहीं मालूम होती, फरमाया नहीं हर

मुसल्मान को नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم के साथ ऐसी ही मुहब्बत हे, वो लोग समझे की मौलाना ने टाल दिया,

फिर मौलाना ने नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم का मुबारक जिकर शुरू किया, वो ध्यान से और रगबत से सुनने लगे, फिर दरमियान मे मौलाना ने उन लोगो के बाप दादा की तारीफ शुरू करदी, तो उन लोगो को अच्छा महसूस ना हुवा और उन्होने फिर नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم के जिकर की खवाहीश की, मौलाना ने फरमाया ये दलील हे तुम पर नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم की मुहब्बत के गालीब होने की, नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم के जिकर के मुकाबले मे अपने बाप दादा के जिकर पसंद ना किया.

मुसल्मान का अपमान हराम हे

गुनहगार से नफरत हराम हे और गुनाहो से नफरत वाजिब हे, हजरत थानवी(रह) का इरशाद हे किसी बडे आलिम के लिये जायज नही कि वो किसी मुसल्मान को हकीर निकम्मा समझे, सामने वाले को अपने से अफजल समझते हुवे गुनाहो पर रोक टोक करना चाहिये

फतावा आलमगीरी मे मसला हे कि अगर किसी

मुसल्मान ने मसलन नमाज गलत पढी और उम्मीद हे कि वो हमारी बात कबूल करेगा तो उस्को समझाना वाजिब हे, आलिम को अपने को आलिम समझना तो जायज हे, मगर अपने को किसी मुसल्मान से अफजल समझना इस्के लिये हराम हे, क्युकी अभी खातमा का पता नही हे,

इस की मिसाल ऐसी हे हुस्न खातमा की मंजिल १०० सीढिया हे, एक ५ पर हे, कोई ५० पर हे, कोई ९० पर हे, तो ९१ पर जो हे इस्को ५ वी सीढी वाले से अफजल समझना कैसे जायज होगा, अगर ९१ वाला गिर जाये तो हड्डी पसली सब टूट जाये और ५ वाला खैरीयत से सारी मंजिले पूरी करले तो क्या होगा, तो इस मिसाल से बात साफ हो गयी.

उम्मत की गिरावट की निशानिया

हजरत मुआज बिन अनस(रदी) से रिवायत हे नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया ये उम्मत शरीअत पर उस वकत तक कायम रहेगी जब तक उन मे तीन चीझे जाहिर ना हो.

१. जब तक उनमे से इल्म और उलमा को ना उठा लिया जाये.

२. उनमे नाजायज औलाद की कसरत ना हो जाये.

३. लानत बाज लोग ना पैदा हो जाये. सहाबा(रदी) ने

अर्ज़ किया लानत बाज लोगो से क्या मुराद हे फरमाया आखरी जमाने मे ऐसे लोग पैदा होगे जो मुलाकात के वकत सलाम के बजाए लानत और अपस मे एक दूसरे को गाली गलोच किया करेंगे. (दूररेमन्सुर)

चार जाहीलीय्त के काम उम्म्ते मुहम्म्दीया ना छोडेगी

अबु याला मे हे नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत मे जाहिलीय्त के चार काम हे जिन्हे वो ना छोडेगी,

१. हसब नसब (खानदान) पर फखर करना.

२. इन्सान को उस्के नसब का ताना देना.

३. सितारो से बारीश तलब करना.

४. मय्यत पर नोहा करना (उंची आवाज से रोना, कपडे फाडना) और फरमाया की नोहा करने वाली औरत अगर बगैर तौबा के मर जाये तो उसे कियामत के दिन गंधक का जोडा पहनाया जायेगा, और खुजली की चादर ओढायी जायेगी.

मुस्लिम शरीफ मे हे नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने नोहा करने वाली औरतो और नोहा को कान लगा कर सुन्ने वालीयो पर लानत फरमायी हे. (तफसीर इबने कसीर).

मामुली इकरामे मुस्लिम (इज्जत देने) पर सारे गुनाह माफ

हजरत अनस बिन मालिक(रदी) फरमाते हे कि हजरत सलमान फारसी(रदी) हजरत उमर(रदी) के पास आये, हजरत उमर(रदी) तकिये पर टेक लगाये हुवे थे, हजरत सलमान(रदी) को देख कर उन्होने वो तकिया हजरत सलमान(रदी) के लिये रख दिया, हजरत सलमान(रदी) ने कहा अल्लाह और उस्के नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने सच फरमाया, हजरत उमर(रदी) ने कहा ऐ अबु अब्दुल्लाह अल्लाह और उस्के नबी करीम صلى الله عليه وسلم का वो फरमान जरा हमे भी सुनाये.

हजरत सलमान(रदी) ने कहा एक मरतबा मे नबी करीम صلى الله عليه وسلم की खिदमत मे हाजिर हुवा नबी करीम صلى الله عليه وسلم एक तकिये पर टेक लगाये हुवे थे, नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने वो तकिया मेरे लिये रख दिया, फिर मुझ से फरमाया ऐ सालमान जो मुसल्मान अपने भाई के पास जाता हे और वो मेजबान उसको इज्जत देने के लिये तकिया रख देता हे तो अल्लाह उसकी जरूर मगफिरत फरमा देते हे. (हयातुस सहाबा)

अच्छा गुमान और तवाजु

हाजी इम्दादुल्लाह मे हुसने जन ऐसा था की किसी की बुराई सुन कर बुराई का असर ही नहीं होता था,

सुन कर बस ये फरमा देते की नहीं वो शख्स ऐसा नहीं हे या तावील कर देते थे, जिन लोगो के बारे मे कुफ्र का फतवा दिया जाता था, उनके बारे मे फरमाया करते थे, की नहीं अच्छे लोग हे, कोई गलती हो गई होगी, हजरत मे तवाजु बहुत ज्यादा थी, अपने आप को सब से कमतर समझते थे, इसलिये सब अच्छे ही नजर आते थे.

दुन्या और उसकी जील्लत

नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم का एक कान कटे मरे हुए बकरी के बच्चे पर गुजर हुवा, आप ने फरमाया तुम मे से कोन पसंद करता हे कि ये मुरदा बच्चा उसको एक दिरहम के बदले मिल जाये, लोगो ने अर्ज़ किया दिरहम तो बडी चीझ हे हम तो इस्को भी नहीं पसंद करते कि वो हम को किसी थोडी सी चीझ के बदले भी मिल जाये, आप ने फरमाया अल्लाह की कसम दुन्या अल्लाह के नजदीक इस से भी जियादा जलील हे जिस कदर ये तूम्हारे नजदीक. (मुस्लिम).

सब से बेहतर और सब से बंदतर

हकीम लुकमान को उनके मालिक ने एक बकरी दी और हुकम किया कि जबह करे, और इसमे से जो सब से बदतर उज्जव हो उसको लाये, चुनांचे उन्होने

जबह किया और उसका दिल और जुबान उस्के पास लाये, फिर मालिक ने उनके एक बकरी दी और हुकम किया कि जबह करे, और इसमे से जो सब से बेहतर उजव हो उसको लाये, उन्होने जबह किया और उसका दिल और जुबान उस्के पास लाये, तो मालिक ने लुकमान से इसकी वजह पूछी, लुकमान ने कहा ये मेरे आका जब ये दोनो उजव बुरे हो जाते हे तो इनसे बदतर कोई उजव नही हे, और जब ये दोनो अच्छे हो जाते हे तो इनसे बेहतर दुसरा कोई उजव नही हो सकता. (कलयूबी)

गुनेहगार रहम के काबिल हे ना की रूसवाई के काबिल

नबी करीम ﷺ का इरशाद हे कि हजरत इसा(अलै) फरमाते थे कि अल्लाह के ज़िकर के सिवा दुसरे कलाम की जियादती ना करो, वरना उससे तुम्हारे दिल सखत हो जायेगे, और सखत दिल अल्लाह से बहुत दुर हो जता हे, और ऐ नजदीकी और दुरी एक इंसानी चीझ हे, इसलिये तुम्हे इसका इल्म भी नही होगा, और गुनेहगार लोगो के गुनाहो को इस तरह ना देखो कि जेसे तुम ही अल्लाह हो यानी इस तरह ना देखो कि जिसका मकसद अपनी बडाई और दुसरो की रूसवाई हो, अपने गुनाहो को इस तरह

देखो कि तुम गुनेहगार बन्दे हो और ये इसलिये कि लोग गुनाहो मे भी मुबतला हे और आफीयत मे भी हे, तो तुम को चाहिये की गुनाहो मे मुबतला लोगो पर रहम करो, और अपनी आफीयत पर अल्लाह की तारीफ करो.

रहम के काबिल और जालिम बादशाह

हजरत वहाब बिन मुनब्बह(रह) फरमाते हे कि एक मरतबा मलैकुल मौत एक बहुत बडे जालिम व जाबर शख्स की रूह कबज करके ले गये कि दुन्या मे इससे बडा कोई जालिम ना था, वो जा रहे थे कि फरिश्तो ने उनसे पूछा, तुमने हमेशा लोगो की जाने कबज की तुम्हे कभी किसी पर रहम भी आया? उन्होने कहा सबसे ज्यादा तरस मुझे एक औरत पर आया जो जंगल मे थी और उसको बच्चा पैदा हुवा की उसकी रूह कबज कर लू, मुझे उस औरत की और उस बच्चे की तन्हाइ पर बडा तरस आया कि इस बच्चे का इस जंगल मे जहा कोई दूसरा नही है क्या होगा फरिश्तो ने कहा ये जालिम जिसकी रूह तुम ले जा रहे हो वो ही बच्चा है मलैकुल मौत हैरत मे रह गये और कहने लगे, मौला तो बडा पाक है बडा मेहरबान हे जो चाहता है करता है.

हजरत अली(रदी) ने दीन को दुन्या पर मुकद्दम किया

हजरत अली(रदी) फरमाते हे नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने मुझ से फरमाया मे तुम्हे ५००० बकरिया देदू या ऐसे ५ कलीमात सीखादु जिनसे तुम्हारा दीन और दुन्या दोनो ठीक हो जाये.

मेने अर्ज़ किया या रसुलल्लाह! ५००० बकरिया तो बहुत ज्यादा हे, लेकिन आप मुझे वो पाच कलीमात सिखादे.

नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया ऐ कहो, तरजुमा- ऐ अल्लाह मेरे गुनाह माफ फरमा और मेरा अखलाक वसी फरमा, और मेरी कमाई को पाक फरमा, और जो रोजी तुने मुझे अता फरमायी हे उसपर मुझे कनाअत नसीब फरमा और जो चीझ तु मुझ से हटाले उसकी तलब मुझ मे बाकी ना रेहने दे. (हयातुस सहाबा)

नोट- आज का मुसल्मान होता तो कहता कि नबी करीम صلى الله عليه وسلم ५००० बकरिया भी दीजये और ५ कलीमात भी सीखाये.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.